Impact Factor-6.261

ISSN-2348-7143

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION'S

RESEARCH JOURNEY

Multidisciplinary International E-Research Journal

PEER REFREED & INDEXED JOURNAL

February-2019

SPECIAL ISSUE

इक्कीसवीं सदी का हिंदी साहित्य : संवेदना के स्वर

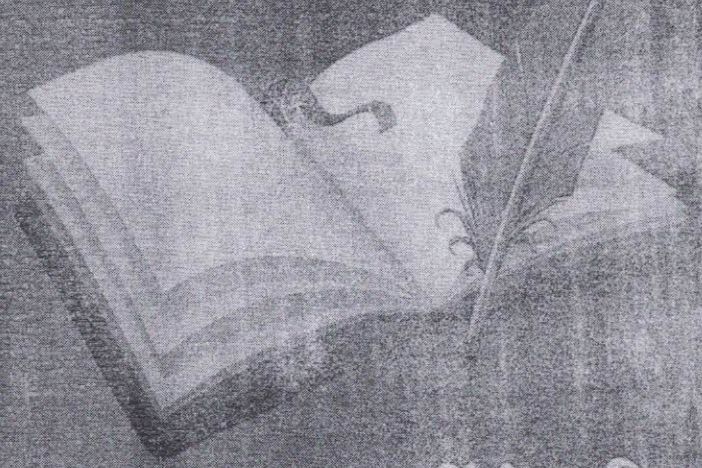

Guest Editor

Dr.R.K.Koparde

Dr.V.V.Arya

Dr.Dhanraj T.Dhangar

Assist.Prof.(Marathi)

MGV's Arts & Commerce College Yeola,

Dist.Nashik (M.S.)

Dr. Anil Chidrawar

I/C Principal

A.V. Education Society's

Degloor College, Degloor Dist.Nanded

ADAT VYAPARI EDUCATION SOCIETY'S DEGLOOR COLLEGE, DEGLOOR Dist.Nanded

Impact Factor – 6.261

ISSN – 2348-7143

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION'S

RESEARCH JOURNEY

Multidisciplinary International E-research Journal

PEER REFREED & INDEXED JOURNAL

February-2019 Special Issue –I

इक्कीसवीं सदी का हिंदी साहित्य : संवेदना के स्वर

Guest Editor:
Dr.Prakash K. Koparde
Dr. V.V.Arya
Dept.Of Hindi,
Vaidhnath College, Parli-Vaijnath, Dist. Beed

Chief Editor -
Dr. Dhanraj T. Dhangar,
Assist. Prof. (Marathi),
MGV'S Arts & Commerce College,
Yeola, Dist – Nashik [M.S.] INDIA

SWATIDHAN INTERNATIONAL PUBLICATIONS
For Details Visit To : www.researchjourney.net

© All rights reserved with the authors & publisher

Price : Rs. 800/-

This Journal is indexed in :
- University Grants Commission (UGC)
- Scientific Journal Impact Factor (SJIF)
- Cosmoc Impact Factor (CIF)
- Global Impact Factor (GIF)
- International Impact Factor Services (IIFS)

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION

20	21 वीं सदी का ग़ज़ल साहित्य — प्रा. डॉ. बंग नरसिंगदास ओमप्रकाश	78
21	मंजुल भगत की कहानियों में नारी विमर्श प्रा.डॉ. लहाडे मुरलीधर अच्युतराव	82
22	बाल साहित्य : एक विमर्श –डॉ. अर्चना परदेशी	85
23	21 वीं सदी का हिन्दी आत्मकथाओं में नारी विमर्श – डॉ. के. श्याम सुन्दर	88
24	इक्कीसवीं सदी की हिंदी कविता (नारी विमर्श के विशेष संदर्भ में) प्रा.डॉ. बळीराम राख	91
25	इक्कीसवीं सदो की हिंदी कविता में व्यक्त स्त्री... – प्रा. डॉ. देशपांडे व्ही.व्ही.	93
26	'दोहरा अभिशाप' : दलित स्त्री के संघर्ष की.... – डॉ.सहदेव वर्षाराणी निवृत्तीराव	96
27	इक्कीसवीं सदी की कविता में नारी संवेदना –प्रा.डॉ. संतोष विजय येरावार	100
28	इक्कीसवीं सदी का व्यंग्य साहित्य – प्रा. डॉ. पुष्पलता अग्रवाल, प्रा.व्यंकट खंदकुरे	104
29	कबूतरीयों की व्यथा : अल्मा कबूतरी –डॉ.रोडे एस.सी.	107
30	"संजीव कृत उपन्यास 'जंगल जहाँ –डॉ. मुनेवर एस. एल. पाटील सुखदेव रामा	109
31	हिजड़ों के अस्तित्व का प्रश्न – डॉ.निम्मी ए.ए.	111
32	पोस्ट बॉक्स नं 203 नाला सोपारा में किन्नरों – प्रा.डॉ.पांडुरंग दुकळे	115
33	इक्किसवीं सदी की हिन्दी ग़ज़ल में नारी चेतना के स्वर – डॉ. अविनाश कासांडे	117
34	मधु कॉंकरिया कृत 'सेज पर संस्कृत' उपन्यास – प्रा. नटवर संपत तडवी	122
35	श्री नरेष मेहता कृत 'षबरी' में चित्रित समस्या – प्रा. वाघमारे के.एच.	125
36	इक्कीसवीं सदी के हिंदी उपन्यासों में स्त्री संवेदना – प्रा.कुलकर्णी वनिता बाबुराव	128
37	इक्कीसवीं सदी का नाटक साहित्य और ममता कालिया –प्रा. घन प्रमोद किशनराव	131
38	21 वीं शती के कहानी साहित्य में स्त्री – प्रा.बालिका रामराव कांबळे	133
39	**'गुलाम मंडी' उपन्यास में चित्रित यथार्थवादी परिवेश** - अबू हौरा	136
40	**'ग्लोबल गाँव के देवता' (उपन्यास) में चित्रित यथार्थ** - इबरार खान	139
41	'आदिवासी' जनजाति की व्यथा :– 'ग्लोबल गाँव के देवता.' –गुंड सचिन मधुकर	143

'RESEARCH JOURNEY' International Multidisciplinary E- Research Journal
Impact Factor - (SJIF) - 6.261, (CIF) - 3.452(2015), (GIF)-0.676 (2013)
Special Issue -1- इक्कीसवीं सदी का हिंदी साहित्य : संवेदना के स्तर
ISSN 2348-7143
February-2019

ADAT VIDYAPARI EDUCATION SOCIETY'S DEGLOOR COLLEGE DEGLOOR Dist Nanded

इक्कीसवीं सदी की कविता में नारी संवेदना

प्रा.डॉ. संतोष विजय येरावार
स्नातक एवं स्नातकोत्तर हिंन्दी विभाग प्रमुख
देगलूर महाविद्यालय, देगलूर

==========

नारी संवेदना की सशक्त अभिव्यक्ति इक्कीसवीं सदी की कविता में व्यक्त हुई हैं । संवेदना के अंर्तगत नारी पीड़ा, त्रासदी, संत्रास, समस्या, शोषण, आत्मनिर्भरता तथा मुक्ति का स्वर आता है । समाज के तस्वीर एवं परिस्थिति के साथ नारी समस्याओं में और विचारों में भी अमूलचूल परिवर्तन आया। नारी सशक्त होकर उभरकर आई । अपनी शक्ति, सामर्थ्य और क्षमता के बलपर उसने अपने अस्तित्त्व का निर्माण किया, अपनी स्वतंत्र और प्रभावी छवि बनाई। सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक, शैक्षिक, राजनितिक, सांस्कृतिक हर क्षेत्र में नारी ने अपने सामर्थ्य का लोहा मनवाया। नारी का सशक्त रुप समाज के सामने उभरकर आया, स्त्री अपने पैरों पर खड़ी हो गई । व्यवस्था और समाज के विकृत मानसिकता के विरोध में अपनी आवाज बुलंद कि तो दुसरी ओर स्त्री अनेकों समस्याओं के जंजाल में फंसती भी गई। बलात्कार, तलाक, कुंवारी माता, विवाहबाह्य संबध, नशाखोरी, जैसी अनेकों समस्याओं ने अपनी जड़े मजबुत की। मीडिया, बाजार, विज्ञापन, फिल्म निर्माण, सिरियल निर्माण सरकारी एवं निजी कार्यालय में स्त्री का दोहन एवं शोषण बढ़ने लगा ।

अर्थप्रधान मानसिकता से उपजे विकृतियों ने मनुष्य को भी विकृत और विक्षिप्त बना दिया । इक्कीसवीं सदी की मानसिकता और समस्याओं की यथार्थ अभिव्यक्ति कविता में दिखाई देती हैं । भुमंडलीकरण, और बाजारवाद ने भारतीय सभ्यताओं को रौंदा है। प्रेम, त्याग, बंधुता, एवं समपर्ण जैसे मूल्य धराशाही हो गए। प्रेम ने विकृति को अपनाया, शरीर सुख प्रेम की अनिवार्य मांग बन गई । प्रेम के नामपर स्त्री का लुटा गया । इस वास्तविकता को 'मंज़री श्रीवास्तव' ने उघाड़ा है ।

" जब अजनबी थे हम
तुमने मुझे जानना चाहा
मैने भीं हंसकर अपने बारे में तुम्हे बताया
हम दोस्त बने
जब तुमने दोस्ती का हाथ बढ़ाया
फिर तुमने मुझे प्रेमिका कहा
जब मैने प्रेम में अपना सर्वस्व समर्पण कर दिया
तो सबसे पहले
तुमने ही मुझे
बनाया ' वेश्या ' "

वर्तमान परिवेश में बाजारु सभ्यता के कारण स्त्री शोषण को बढ़ावा मिला है । प्रेम के नाम पर स्त्री शोषण बढ़ गया है । प्रेम के नाम पर स्त्री को अपनी वासना का शिकार बनाया जा रहा है । उसे कुंवारी माता और वैश्या बनने पर मजबुर किया जा रहा है। महानगरों में यह विकृति तो अत्याधिक प्रबल हो गई है । प्रेमजाल में फांसकर जब स्त्री चरित्र का हनन किया जाता है, उसे गर्भावस्था में त्यागा जाता है, तो वह आत्महत्या करती है या वैश्या बनने को मजबुर हो जाती है। समाज उस स्त्री को कुल्टा एवं पतित कहकर समाज से बहिष्कृत करती हैं; परंतू जिसने उसे लांछित, प्रताडित किया उसका यौन शोषन किया वह बेखौफ, हो आजाद उठती है और दोष केवल स्त्री को दिया जाता है।

नारी शोषण की प्रकिया निरंतर चल रही है। बदलते समाज के साथ नारी शोषण का स्वरुप भी बदल गया है, लेकिन नारी शोषण थमा नहीं है। सती प्रथा, बालविवाह, अनमेल विवाह, जैसी शोषण

करनेवाली प्रथायें तो समाप्त हो गई परंतु भ्रणहत्या, बलात्कार, नौकरीपेशा महिलाओं का शोषण, कुंठा, नशाखोरी, एकतर्फा प्रेम से प्रभावित हो हत्या, ॲसिड ॲटक, अश्लीलता, अपहरण आदि अनगिनत समस्यायें पनपने लगी। मुनाफाखोरी के लिए स्त्री देह का सौदा किया जा रहा है। दहेजप्रथा ने संपुर्ण व्यवस्था को खोखला बना दिया हैं। दहेज के कारण ही स्त्री–भृण हत्या जैसी भयावह समस्या पणप रही है । मनुष्य–अपने ही बच्चों को जन्म लेने से पहले ही हत्या कर रहा है । इतना घिनौना कार्य शायद पशु भी ना करे परंतु मनुष्य तो पशु से भी अधिक हिंस और कुर हो गया है। स्त्री–भृण हत्या जैसे गंभीर समस्या को । 'एक भ्रुण की आत्मकथा ' कविता में **'रंजना जायस्वाल'** ने उघाड़ा है ।

"एक दिन मां पिता के साथ अस्पताल गयी
डॉक्टर ने मशीन से मुझे देखा
फिर पिता से जाने क्या कहा
कि उनका चेहरा गुस्से से भर गया
मां के साथ मैं भी डर गयी
घर लौटकर पिता मॉ से झगडने लगे
मैंने कान लगाकर सुनने की कोशिश की
और जो सुनाई पडा उसने मुझे काठकर दिया
पिता मेरी हत्या की बात कर रहे थें
मैं सदमें मे थी
क्या यही वह धरती है, जहॉ जन्म लेने को
तरसते हे देवता
क्या स्त्री के रुप में जनम लेना अपराध है ।
मां रो रही थी, तडप रही थी
पर थी तो एक स्त्री ही
नहीं होता जिसे अधिकार अपनी कोख पर भी । "

जो स्त्री संपुर्ण परिवार का संचलन करती है । सभी की निस्वार्थ भाव से सेवा करती है । उसी स्त्री को परिवार ने नगन्य स्थान दिया गया । जो मां नौ महिने अपने कोख में बच्चों का पोषण करती है, उसे धारण करती है, उसे अपने भृण को जन्म देने का अधिकार भी परिवार व्यवस्था ने नहीं दिया कितनी विडंबना है ना ? स्त्री भृण हत्या करने का पाप पुरुष व्यवस्था कर रही है । मां भी व्यवस्था का शिकार हों। अपने ही बच्चों को मारने को मजबुर हो जाती है। पुरुष–प्रधान विकृत मानसिकता ने स्त्री–को उपभोग वस्तु मात्र समझा है। उसका अस्तित्त्व केवल परिवार को वारिस देने तक सीमित रखा है। स्त्री–भृण हत्या जैसे ज्वलंत प्रश्न को कविता में उघाड़कर समाज को सचेत करने का प्रयास किया गया है ।

इक्कीसवीं सदी में जहां स्त्रियों ने अपने अस्तित्त्व, क्षमता और सामर्थ्य के बलपर हर क्षेत्र में अपने–आप को साबित किया है। जल, थल और आसमान तक हर क्षेत्र में वह पहुंच गई है। राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, शैक्षिक, आंतरिक्ष, विज्ञान आदि अनेकों क्षेत्र में स्त्रियों ने नये मूकाम हासिल किये है। तो दुसरी ओर उपभोग प्रवृत्ति, अर्थकेंद्रित मानसिकता, भौतिक सुख साधनों की लालसा, शरीर सुख प्रधान प्रेम, और स्त्री–को भोग्या मानने की पुरुषी मानसिकता भी तीव्र गति से बढ़ी है । जिसकारण स्त्रियों का यौन शोषण बढ़ गया है । पुरुषों ने प्राचीन काल से वर्तमान तक स्त्री का केवल उपभोग ही अधिक किया है । अश्लीलता, नग्नता, अनीति, विकृत उपभोगी मानसिकता के कारण बलात्कार, यौन शोषण, हत्या जैसी घटनाएं बढ़ रही है। स्त्री को वासना का साधन मात्र मानने की प्रवृत्ति के कारण ही उसका यौन शोषण बढ़ रहा है । इस वास्तविकता को ' जहीर कुरेशी ' ने उघाडा है ।

" क्या कहे अखबार वालों से व्यथा औरत
यौन शोषण की युगों से लंबी कथा औरत "

मनुष्य को वासना ने अंधा बना दिया है। वह मानव से पशु बन गया है, इसी कारण छोटी–छोटी बच्चियों कों भी अपनी वासना का शिकार बनाया जा रहा है। आये दिन नाबालिक लडकियों के यौन शोषण की बढ़ती घटनायें इस बात का प्रमाण हैं । सामूहिक बलात्कार की शिकार भी अनगिनत लडकियां हो रही है। नाबालिक लडकियों के यौन शोषण की वास्तविकता को ' बच्ची की फरियाद ' कविता में ' रंजना जयस्वाल ' ने उघाडा है ।

" मुझे इतनी जोर से प्यार मत करो अंकल
देखो तो, मेरे होंठो से निकल आया है खून
मेरे पापा धीरे से चुमते हैं सिर्फ माथा
मुझे मत मारो अंकल, दुखता है ।
मै आपकी बेटी से भी छोटी हूं
क्या उसे भी मारते हैं इसी तरह
मेरे कपडे मत उतारों अंकल
अंकल–अंकल ये सब मत करो "

वासना ने मनुष्य को पशु सम कुर बना दिया है। वासना एवं उपभोग प्रधान मानसिकता इक्कीसवीं सदी की देन है। मनुष्य केवल वस्तु, स्त्री एवं सत्ता का उपभोग करना चाहता है। यौन–शोषण करने के लिए सारे जायज–नाजायज हथकंड़े अपनाये जाते हैं । पैसे, सत्ता एवं कुर्सी का दुरुपयोग अपनी वासना तृप्ति के लिए किया जा रहा है। विज्ञापन निर्माण, फिल्म एवं सिरियल निर्माण, निजी क्षेत्र, राजनीति, धर्म, कामकाज स्थल, आदि अनेकों क्षेत्रों में महिलाओं का यौन–शोषण किया जा रहा है। हाली में मी–टू कॅपेन चला था। जिसमे अनेकों क्षेत्रों में होनेवाले यौन–शोषण की घटनाये उजागर हुई है । सत्ता, कुर्सी, पैसे, पदोन्नती का झांसा देकर होनेवाले शोषन को ' **सुनीता जैन** ' ने '**दिल्ली–5** ' कविता में उघाडा है ।

" वो चाहता है आते ही उसको
वह अपना बिस्तर पेश करे
और – शराब की गॅधाती अश्लील त्वचा को
हंसते–हंसते रोज सहे
जाते–जाते फिर चाय का प्याला भेंट करे "

एकतरफ कुर्सी का दूरुपयोग यौन–शोषण के लिए किया जा रहा है तो दूसरी ओर प्रेम विशाक्त हो गया है । उसी प्रकार प्रेम में जहां त्याग और समर्पण होता था आज वहीं प्रेम विकृत, विक्षिप्त और घृणित हो गया है । प्रेम में केवल शरीर –सुख की कामना की जा रही है । इक्कीसवीं सदी का प्रेम षडयंत्र, लालच, वासना, भोग और चकाचौंध के चकव्युह में फस गया हैं । जिसकारण कुमारी माताओं का प्रमाण, अवैध गर्भपात, एकतर्फा प्रेम के चलते हत्या, ॲसिड–ॲटक, अवैध शारीरिक संबधो में तेजी से वृदधी हो गई है । प्रेम जाल में फंसाकर लड़कियों गर्भवती बनाया जाता है और लोकलाज के कारण लडकी को गर्भपात करना पडता है । गर्भपात के लिए मजबुर होती लड़की की पीडा और त्रासदी कों ' **नहीं जानती लड़की** ' कविता में ' **रंजना जायस्वाल** ' ने उघाडा है ।

" प्रेम में
कुछ भी नहीं सुनती
लडकियां
गर्भपात के लिए लेटी
लडकी की आंखो में
पीडा के साथ थी एक चमक
विश्वास,
नौकरी की तलाश में गया प्रेमी
आएगा लौटकर
नहीं जानती लडकी
कि छली जा चुकी है वह । "

नारी के अस्तित्त्व को शरीर–सुख तक सिमित रखा गया है। नारी को हर समय वासनांध आंखें ताकती रहती हैं। उसके उभरे अंगो का पाने की लालसा मनुष्य को पतित और घृणित बना देती है। नारी को चरित्र, विवाह, के नाम पर भी छला जाता हैं। विवाहित स्त्री को अपने मर्जी के खिलाफ शरीर सुख की पुरषों की लालसा का पुरा करना पड़ता है। समाजमान्य बलात्कार की मात्रा में होती बढोतरी, घटस्फोट, विवाहपूर्व शारीरिक सुख, विवाह बाह्य संबध, लिव्ह–इन रिलेशनशीप, यह सब इक्कीसवीं सदी की देन है। स्त्री को वासना पूर्ति मात्र तक सीमित रखने वाली मानसिकता को उघाडती ' कात्यायनी ' की यह कविता

" उन्होने यही
सिर्फ यही दिया हमें
अपनी वहशी वासनाओं की तृप्ति के लिए
दिया एक बिस्तर
जीवन घिसने के लिए, राख होते रहने के लिए
चौका – बरतन करने के लिए बस एक घर
समय – समय पर
नुमाइश के लिए गहने पहनाए
और हमारी आत्मा को पराजित करने के लिए
लाद दिया उसपर
तमाम अपवित्र–इच्छाओं और दुष्कर्मों का भार । "

स्त्री अविरत पुरुष व्यवस्था से उपजी मानसिकता का ि"ाकार हो रही है । अन्याय, अत्याचार, शोषण, पीड़ा वासनांध निगाहें यह सब स्त्री जीवन के अंग बन गए हैं । घर से लेकर बाहर तक, गांव से लेकर महानगरों तक महिलाओं के साथ हिंसा, छेडछाड, अपहरन, धमकियां, हाथापाई और यौन"ोषण की घटनायें घटीत हो रही है। आरुषी, निर्भया, कठुआ, उन्नाव, जुमला (झारखंड) , गुजरात, छत्तीसगढ़ आदि अनेकों घटनाएं समाज की विकृत, और घृणित मानसिकता को द"ार्ती है। किसप्रकार महिलांओं और छोटे–छोटी बच्चियों के साथ सामुहिक बलात्कार किए जा रहे हैं। बलात्कार के बाद निर्मम हत्याएं की जा रही है । चरित्र पर प्र"नचिन्ह लगा हत्याएं की जा रही हैं । प्रेमजाल में फांसकर बलात्कार किया जा रहा है। लड़कियों को छेड़ना, प्रतडित करना तो साधरन बात हो गई है। इक्कीसवीं सदी से उपजी उंपभोगवादी, बाजारवादी, भौतिकवादी और अर्थवादी मानसिकता से स्त्री शोषण की घटनाओं में तेजी से बढ़ोतरी हो रही हैं। न्याय व्यवस्था, कानुन व्यवस्था समाज व्यवस्था, राजनीतिक व्यवस्था एवं प्र"ासनिक व्यवस्था से महिलाओं के हाथ केवल निरा"ा, पीड़ा और वेदना ही आई है। अनेकों घटनाओं के बाद जुलूस निकाले गए, धरने दिये गए, आंदोलन किए गए, लेकिन परिस्थिति जस की तस है। स्त्रियों को वासना पुर्ति का माध्यम समजने की मानसिकता के कारण तथा स्त्री शोषण को दुर्लक्षित करने की प्रवृत्ती के कारण निर्भया और आरुषी हत्याकांड जैसी घटनायें घटित होती है । स्त्रीयों के प्रती समाज की मानसिकता को उघाडनेवाली

इक्कीसवीं सदी की कविता में स्त्री वेदना के साथ–साथ स्त्री मुक्ति का स्वर भी उजागर हुआ है। नारी के विविध समस्याओं को उघाड़ने का और नारी को सचेत एवं प्रेरित करने का कार्य कविता ने किया है। सदियों से हो रहीं नारी लुंठन की अभिव्यक्ति कविता में हैं। नारी शोषण, अन्याय, अत्याचार, पीड़ा, संत्रास, कुंठा को कविता में उघाड़ा गया है। बलात्कार, हत्या, प्रताडना, सामुहिक बलात्कार, एकतर्फा प्रेम के कारण हो रहे अपराध, स्त्री–भृण हत्या, कामकाजी महिलाओं का यौन शोषण, पारिवारिक स्त्रियों की दुर्दशा, मीडिया एवं विज्ञापन में स्त्रियों की दशा एवं दिशा, प्रेमजाल में फंसकर वासना का शिकार हो वैश्या व्यवसाय के तरफ ढकेली जाने वाली स्त्रीयों की त्रासदी, विवाह का झांसा देकर छली जाने वाली कुंवारी माताएं, सामाजिक एवं धार्मिक कुरीतियों का शिकार होती महिला, पुरुषी वासनांध मानसिकता से आहत स्त्री आदि अनेको स्त्री विषयों को इक्कीसवीं सदी की कविता में उघाड़ा गया है । स्त्री के शारिरिक, मानसिक और वैचारिक संघर्ष को इक्कीसवीं सदी की कविता में अभिव्यक्त किया गया है ।

Dr. Anil Chidrawar
I/C Principal
A.V. Education Society's
Degloor College, Degloor Dist.Nanded